बैगा जनजाति महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण (कबीरधाम जिले के बोड़ला ब्लॉक के अंतर्गत घुरसीपकरी ग्राम के विशेष संदर्भ में)

डॉ. प्रीति शर्मा[1], मुकेश कुमार कामले[2]

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्रद्ध शा.दू.ब.स्वशासी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रायपुर, छ.ग.द्ध

शोधार्थी, समाजशास्त्रद्ध शा.दू.ब.स्वशासी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रायपुर, छ.ग.द्ध

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के बोड़ला जनपद पंचायत के अंतर्गत घुरसीपकरी ग्राम में निवासरत विशेष पिछड़ी जनजाति बैगाओं का सर्वेक्षण पद्धति से वैज्ञानिक अध्ययन कर उक्त गांव के बैगा महिलाओं के जीवन में पिछले 10–15 वर्षों में हुऐ सामाजिक–आर्थिक बदलाव को जानने का प्रयास किया गया है। शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु अध्ययन प्रविधि के रूप में अवलोकन एव साक्षात्कार का प्रयोग कर साक्षात्कार अनुसूची को उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया है।

KEYWORDS: लिंगानुपात, साक्षारता, मोबाइल, टीवी, इंटरनेट, रिचार्ज, अस्पताल, शासकीयनौकरी, वनोपज, पशुपालन इत्यादि

प्रस्तावना

मानव समाज के उद्विकास पर नजर डालें तो प्रत्येक मानव समाज पाषाण कालीन अवस्था–जनजातीय अवस्था–ग्रामीण अवस्था–नगरीय अवस्था– से होते हुए पाश्चात्य अवस्था तक पहुंचती है। विकास की दौर में नगर समाज और पाश्चात्य समाज को आधुनिक वैज्ञानिक दौर में तमाम भौतिक सुख सुविधाओं का लाभ मिलता है।किंतु यदि जनजाति समाज की बात करें तो यह समुदाय आज भी सुदूर वनांचल एवं पर्वतीय क्षेत्र में निवास करने के कारण आधुनिक सुख सुविधाओं से कोसो दूर नजर आतें है। छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सभी क्षेत्रों में जनजातियों का प्राचीन काल से ही आश्रय स्थल रहा हैं। राज्य के पूर्वोत्तर क्षेत्र स्थित मैकल पर्वत जो छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश की सीमा रेखा बनाती है में निवासरत बैगा जनजाति को विशेष पिछड़ी जनजाति का दर्जा दिया गया है। बैगा जनजाति अपनी सांस्कृतिक परंपरा के लिए न केवल भारत में अपितु वैश्विक स्तर भी विख्यात है। किवंदन्तियों के अनुसार सृष्टिकर्ता भगवान ब्रम्हा ने सृष्टि की रचना के बाद दो आदमियों को जिसमें एक को हल देकर तथा एक को टंगिया देकर धरती पर भेजा। हल वाला आदमी खेती करने लगा जो बाद में गोंड़ कहलाये तो वहीं टंगिया वाला आदमी लकड़ी काटने के लिए जंगल चला गया, उस समय कपड़ा नही था इसलिए वह नंगा बैगा कहलाये इन्ही के वंशज बैगा कहलातें है। प्राख्यात ब्रिटिश समाजशास्त्री वेरियर एलविन ने बैगा जनजाति का अध्ययन किया और द बैगा नामक पुस्तक लिखा। ऐसा माना जाता है कि उन्होने बैगा संस्कृति से प्रभावित होकर एक बैगा लड़की से विवाह भी किया। उसके प्ष्चात् अनेक समाजशास्त्रीयो एवं मानवशास्त्रीयों ने बैगा जनजातियों के सांस्कृतिक परंपरा जैसे विवाह, नृत्य, गीत आदि पर अनेक शोध कार्य किये हैं। किंतु बदलते परिवेशा में बैगा महिलाओं के आर्थिक समाजिक सशक्तिकरण पर कार्य नही दिखाई देतें हैं। वर्तमान में असरकार द्वारा बैगा जनजाति के आर्थिक एवं सामाजिक, शैक्षणिक विकास के लिए अनेक योजनाऐं चलायी जा रही है। शोधार्थी द्वारा अपने इस अध्ययन में कबीरधाम जिले के बोड़ला ब्लाक में निवासरत बैगा महिलाओं आर्थिक–सामाजिक सशक्तिकरण वर्तमान स्थिती को जानने का प्रयास किया गया है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकनः आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रषिक्षण संस्थान, नवा रायपुर ;छत्तीसगढ़द्ध बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति का आधारभूत सर्वेक्षण प्रतिवेदन (2020) के अनुसार 6 वर्ष से अधिक आयु के बैगा जनजातियों में 57.37 प्रतिशत पाया गया है। बैगा जनजातियों के आवास के मामलें में 77.6 प्रतिशत मकान कच्चा होना पाया गया है। इसके साथ ही साथ बैगा जनजातियों के अर्थव्यवस्था के बारें यह बताया गया है कि इनकी अर्थव्यवस्था संग्रह या बचत का ना होकर मात्र जीवन निर्वाह तक सीमित होती है इसलिए सामाजिक सांस्कृतिक अवसरों पर राशि या सामाग्री की आवश्यकता होने पर सगे संबंधियो, दुकानदार या बिचौलियें पर पूणतः आश्रित होतें है, फलतः बैगा जनजातियों में ऋणग्रस्तता अत्यधिक पसयी जाती है।[1]

खरे, डॉ. कल्पना (2019) ने जनजाति विकास योजनाओं के प्रभावों का मूल्यांकन मध्यप्रदेश के शहडोल जिले के अंतर्गत गोहपारू विकासखंड के अंतर्गत किया और पाया कि बैगा जनजाति के लोग अभी भी शासकीय योजनाओं का लाभ नही ले पा रहें है।[2]

अध्ययन के उद्वेश्यः

1. बैगा महिलाओं पर शासन की योजनाओं का प्रभाव ज्ञात करना।
2. बैगा महिलाओं कीं वर्तमान आर्थिक स्थिति को ज्ञात करना।
3. बैगा महिलाओं कीं वर्तमान सामाजिक स्थिति को ज्ञात करना।
4. बैगा महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलाव के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

अध्ययन का महत्तवः

1. प्रस्तुत अध्ययन से बैगा महिलाओं में विकास एवं सामाजिक –आर्थिक सशक्तिकरण को समझने में मदद मिलेगी।

2. प्रस्तुत अध्ययन से बैगा महिलाओ।पर शासन की योजनाओं का प्रभाव को जानने में मदद मिलेगी।
3. प्रस्तुत अध्ययन से बैगा महिलाओ के जीवन स्तर को जानने मे मदद मिलेगी।

अध्ययन पद्धतिः प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा वैज्ञानिक अध्ययन पद्धति के तहत् गांव का ब्यक्तिक अध्ययन के साथ गांव के संपूर्ण परिवार का सर्वेक्षण करके मात्रात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया। इसके साथ ही साथ शोधार्थी द्वारा उक्त शोध में अध्ययन प्रविधि या तकनीक के रूप में प्रेक्षण/अवलोकन तथा साक्षात्कार का प्रयोग कर साक्षात्कार अनुसूची को उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया है। यह शोध वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प के अंतर्गत है। द्वितीयक आंकड़ो का संकलन शोधार्थी द्वारा ग्राम पंचायत के सरकारी रिकार्ड, ग्राम के स्कूल का रिकार्ड, ग्राम के अस्पताल रिकार्ड का अवलोकन कर किया गया।

अध्ययन क्षे़त्र का परिचयः कबीरधाम जिले की स्थापना 06 जुलाई 1998 को बिलासपुर एवं राजनांदगांव जिले कुछ हिस्सों को मिलाकर की गई थी। जिले का क्षेत्रफल 1925 वर्ग किलो मीटर है। यह जिला $21^{0}32'$ से $21^{0}35'$ उत्तरी अक्षांष तथा $80^{0}48'$ से $80^{0}28'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। शोध की अध्ययन इकाई ग्राम भूरसीपकरी का ब्लॉक बोडला कबीरधाम जिले का वन संपदा से पूर्ण है। साल एवं सागौन जिले की प्रमुख वृक्ष प्रजातियां है। इसके साथ ही साथ बोडला ब्लाक खनिज संपदा मे भी महत्तवपूर्ण है। अध्ययन इकाई ग्राम भूरसीपकरी बाक्साइड भंडार से परिपूर्ण है। बोडला ब्लाक के अंतर्गत 6636 बैगा परिवार निवासरत है जो कि जिले के कुल बैगा परिवारों का 26.99 प्रतिशत है।

विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा परिवार का कबीरधाम जिले में संकेद्रण जिले के अंतर्गत बोडला आदिवासी बाहूल्य वाला एक महत्तवपूर्ण ब्लाक है। शोध की अध्ययन इकाई ग्राम भूरसीपकरी जिला मुख्यालय कबीरधाम से लगभग 75 किमी. दूर तथा ब्लॉक मूख्यालय से 43 किमी दूर पहाड़ी एवं जंगलों के बीच बसा बैगा जनजाति बाहूल्य ग्रम है। ग्राम में पहुचने हेतु पक्की सड़क बना हुआ है। जिसके कारण यातायात के आधुनिक साधन जैसे मोटरसायकल, कार, बस का इस्तेमाल करके ग्राम में आसानी से पहुंचा जा सकता है।

विकासखंण्ड	बैगा परिवार		भूरसीपकरी में बैगा परिवार	
	संख्या	प्रतिषत	संख्या	जिले के कुल बैगा परिवार में प्रतिशत
बोडला	6636			–46
पंडरिया	4625			50
योग	11261	100	70	0.61

अध्ययन इकाई ग्राम भूरसीपकरी का ब्यक्तिक अध्ययनः शोध की अध्ययन इकाई ग्राम भूरसीपकरी जिला मुख्यालय कबीरधाम से 73 किमी तथा ब्लाक मुख्यालय से 45 किमी दूर पहाड़ी क्षे में बसा बैगा परिवार बाहुल्य ग्राम है। गांव को ग्राम पंचायत का दर्जा 2014–15 में मिला इस गांव में 70 बैगा परिवार सहित 02 यादव एवं 03 गोंड़ परिवार निवासरत है। जिसकी कुल जनसंख्या 400 है, जिसमें 350 बैगा लोगों की जनसंख्या तथा 50 अन्य की जनसंख्या है। ग्राम पंचायत का मुखिया सरपंच बैगा जनजाति का निर्वाचित जन प्रतिनिधि है एवं 08 पंचायत 08 पंच सदस्य बैगा समुदाय से ही है। ग्राम जिला एवं ब्लाक मुख्यालय से बारहमासी पक्की सड़क से जुड़ा है जिसका निर्माण 2012–13 में मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत की गई है। ग्राम में बैगा बच्चों की पढ़ाई लिखाई हेतु मिडील तक स्कूल है। जिसमें 03 शिक्षक अपनी सेवाऐं दे रहें ह जहां प्राइमरी में 47 एवं मिडील में 45 बच्चे अध्ययनरत है। छोट बच्चे के देखभाल हेतु ग्राम में आंगनबाड़ी भी है। आंगनबाड़ी एवं सकूल दोना में बैगा बच्चों कों पढ़ाई के साथ साथ पूरक पोषणाहार एवं मध्यान्ह भोजन का लाभ मिलता है। गांव में बैगा लोगों को स्वास्थ्य लाभ हेतु उपस्वास्थ्य केंद्र की स्थापना की गई है। जो नियमित रूप से खुलता है एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ता नियमित रूप से अस्पताल में बीमार बैगा की इलाज करतें है, एवं दवाई प्रदान करतें है। गांव में ग्राम पंचायत की बैठक नियमानुसार होती है। गांव के जनप्रतिनिधि बैठक में भग लेंतें है। गांव के 10 बैगा सदस्य शासकीय नौकरी में है तथा गांव में 06 महिला स्वसहायता बना हुआ है जो क्रमशः जय मां दूर्गा, जय मां लक्ष्मी, जय मां बंजारी, जय मां शीतला, जय मां नागाबैगीन, जय मां धरती मइया के नाम से संचालीत है जिससे गांव की बैगा महिलाऐं अपनी आर्थिक हितों की पूर्ति करतें है। गांव के लगभग 50 परिवारों का मकान पक्का बन चूका है। तथा सभी परिवारों के मकानों में बिजली कनेक्शन है। तथा लगभग 70 प्रतिशत परिवार में स्मार्ट फोन का इस्तेमाल किया जाता है। गांव के बैगा महिलाओं द्वारा भी अब सोशल मीडिया चलाया जाता है। गांव के अधिकांष परिवार में मनोरंजन के लिए टीवी है। इसके अतिरिक्त गांव के सभी परिवारों को उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन मिला है किंतु क्षेत्र में लकड़ी की प्र्याप्त उपलब्ध् ाता के कारण अधिकांश परिवार जलाउ लकड़ी से खाना बनातें है। गांव में रोजगार सृजन हेतु मनरेगा कार्यक्रम चलता है। गांव मे योग्यताधरियों के पास जाबकार्ड बना है। गांव के 95 प्रतिशत लोगों का बैंक में खाता खुल चुका है। जिससे सभी लोग वित्तीय संस्थान से जुड़ चुकें हैं। गांव के ब्यक्तिक अध्ययन से पता चलता है कि छत्तीसगढ़ बनने के बाद लगभग 10–15 साल के अंदर गांव के बैगा समुदाय में आर्थिक सामाजिक विकास हुआ है।

गांव के बैगा महिलाओं की आर्थिक स्थितिः

मासिक आय (हजार में)

क्रमांक	मासिक आय	बैगा महिलाओं की संख्या
1.	1000 से 2000 तक	9
2.	2000 से 3000 तक	7
3.	3000 से 4000 तक	14
4.	4000 से 5000 तक	11
5.	5000 से अधिक	29
कुल		70 महिलाऐं
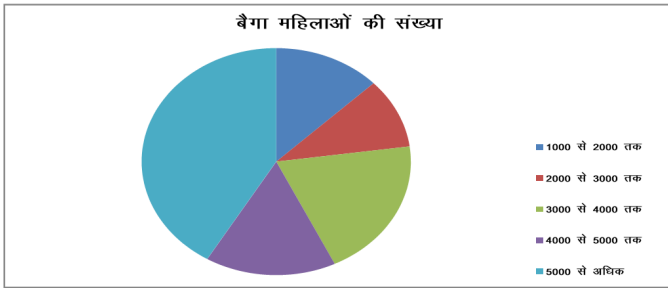
सुझावः बैगा महिलाओं में आर्थिक सामाजिक सशक्तिकरण हेतु बैगा विकास प्राधिकरण जैसे अनेक कल्याणकारी योजनाऐं शासन प्रशासन द्वारा चलायी जा रही है, जिससे उस वर्ग में निश्चित तौर पर धिरे धिरे विकास और बदलाव हो रहे हैं। किनतु अभी भी इस समुदाय में अनेक कुरूतियां जैसे मद्यपान, अशिक्षा, अस्वच्छता जैसी बुराइयां विद्वमान है। जिसे दूर किये बिना इस समूह के विकास की बात करना एक कोरी कल्पना है। किंतु इसके लिए शासन प्रशासन के साथ साथ जागरूकता एक महत्तवपूर्ण कदम है इसके लिए गैर सरकारी संगठन एवं हम सबको प्रयास करने की जरूरत है। ताकि विशेष पिछड़ा जनजाति बैगा और उस वर्ग की महिलाऐं भी विकास की मुख्य धारा में आ सके और उनके जीवन स्तर में सुधार हो सकें।

निष्कर्ष

1. गांव में बैगा महिलाओं कीं वर्तमान आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।
2. गांव में बैगा महिलाओं पर शासन की योजनाओं का प्रभाव पड़ा है।
3. गांव में बैगा महिलाओं की वर्तमान सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है।
4. गांव में बैगा महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार आया है।
5. बैगा के महिलाओं का आर्थिक सामाजिक सशक्तिकरण हुआ है।

संदर्भ सूची

1. आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रषिक्षण संस्थान ,नवा रायपुर बैगा विषेष पिछड़ी जनजाति का आधारभूत सर्वेक्षण 2020
2. खरे, डॉ कल्पना 2019 जनजाति विकास योजना का प्रभाव षहडोल जिले के परिप्रेक्ष्य में।